ओमशान्ति मीडिया

OM SHANTI GLOBAL FAMILY PLATINUM JUBILEE 75 BRAHMAKUMARIS 2011

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 12 अंक - 23 मार्च - 1, 2012 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.00 रु.

‘एक ईश्वर एक विश्व परिवार’ का महामंत्र सर्व समस्याओं का समाधान - मोदी

‘प्लेटिनम जुबली’ के अवसर पर समाज के विभिन्न वर्गों के लिए छः दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया

अहमदाबाद। ब्रह्माकुमारीज् संस्था द्वारा विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान से सिंचते हुए गौरवशाली 75 वर्ष पूर्ण होने पर वीनस ग्राउण्ड में ‘अमृत महोत्सव’ का आयोजन किया गया। जिसे सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विश्व एक परिवार है और हम एक ही ईश्वर के संतान हैं। यह शास्त्रों में भी कहा गया है। इस सूत्र को हम अपने जीवन में अपनाकर ही सर्व समस्याओं से मुक्त हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत की आध्यात्मिक शक्ति ही इसकी प्राणशक्ति है। जब हम अध्यात्म को समझ लेंगे तभी हम विश्व में महान बन सकते हैं। हमारी संस्कृति की विरासत ‘वसुद्यैव कुटुम्बकम’ की भावना है। और यह संस्था इसी उद्देश्य को परिपूर्ण कर रही है। ‘एक ईश्वर एक विश्व परिवार’ यह वैश्विकरण के मूल में आध्यात्मिक संस्कृति का आविष्कार कर रही है। यह संस्था एक लम्बा सफर तय करते हुए आज जन-जन को ‘अमृत महोत्सव’ का संदेश दे रही है।

उन्होंने कहा कि यह संस्था नारी को एक शक्ति के रूप सम्मानित कर विश्व को एक नया दर्शन दिया है। जो कि भारतीय संस्कृति में नारी की गौरवगाथा की परंपरा को प्रतिबिम्बित करती है।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि आज हर मनुष्य सुख, शांति से जीने के लिए अनेक प्रयास करता है लेकिन उसे अशांति ही हाथ लगती है। वह कभी इसका कारण जानने की कोशिश नहीं करता है। वह सिर्फ एक गलती करता है कि उसने ‘मेरा’ को ‘मैं’ समझ लिया। जब वह स्वयं को आत्मा समझकर कार्य करेगा तो शांति उसके पास स्वत: ही आयेगी। क्योंकि शांति तो आत्मा का गुण है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय संगमयुग चल रहा है। इस युग में ही हम जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हैं। अभी स्वर्णिम दुनिया आने वाली है जहां सुख-शांति और पवित्रता का साम्राज्य है। वहां हर मानव देव समान होता है। संस्था के महासचिव व ग्लोबल अस्पताल के ट्रस्टी ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि हम सभी आत्माओं के परम पिता परमात्मा इस संस्था के माध्यम से मानव को दिव्य गुणों से श्रृंगार कर दैवी संस्कृति वाली दुनिया अर्थात् सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। जहां हर मानव में पवित्रता, सत्यता, सुख-शांति नेचुरल गुण के रूप में विद्यमान रहती है। इस अवसर पर राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देश-विदेश के हजारों भाई-बहनों ने भाग लिया।

अहमदाबाद। ‘प्लेटिनम जुबली’ कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी, दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.सरला तथा अन्य।

परिवर्तन के लिए आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता

रायपुर। संस्था द्वारा विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान की धारा से सिंचते हुए गौरवशाली 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विधानसभा मार्ग पर स्थित शांति सरोवर में ‘एक ईश्वर और एक विश्व परिवार’ विषय पर ‘प्लेटिनम जुबली महोत्सव’ का आयोजन किया गया। इस महोत्सव का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए छतीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम् शेखरदत्त ने कहा कि आज सामाजिक बदलाव के लिए आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता से ही मन में निर्मल विचार उत्पन्न होते हैं जिससे हमें सही और गलत का निर्णय करना आसान हो जाता है। उन्होंने कहा कि अध्यात्म सभी गुणों की जननी है जिसे अपनाकर व्यक्ति श्रेष्ठ और चरित्रवान बन सकता है। इसलिए इसकी शिक्षा बच्चों को अवश्य ही देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सारे धर्मों का उद्देश्य जीवन में सुख और शांति प्राप्त करना ही है और राजयोग का भी यही लक्ष्य है। लेकिन राजयोग का उपयोग हम जीवन में आने वाली हर समस्यों के समाधान में कर सकते हैं। राजयोग के द्वारा ही समाज में सुख और शांति लायी जा सकती है।

मुख्यमंत्री डॉ.रमनसिंह ने दादी रतनमोहिनी का प्रदेशवासियों की ओर से शॉल भेंटकर स्वागत करते हुए कहा कि आपके आगमन से हम धन्य-धन्य हो गये। आप जैसे महापुरुषों के आने से विचारों में शुद्धता आती है और वातावरण भी पवित्र बन जाता है। उन्होंने माउण्ट आबू प्रवास के दौरान अपने अनुभवों को बताते हुए कहा कि माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमारीज् का मुख्यालय देखना सभी मंत्रियों और विधायकों के लिए अनोखा अनुभव रहा। वहां हमने देखा कि कैसे इस संस्था के द्वारा सारे विश्व में आध्यात्मिक और नैतिक जागृति लाने का विशाल कार्य किया जा रहा है। उन्होंने इस संस्था के द्वारा किये जा रहे कार्यों की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दी।

संस्था की अतिरिक्त सह मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आज का मनुष्य समय के अधीन हो गया है, उसके पास सारे कार्यों को करने के लिए समय तो है लेकिन ‘स्व’ का कल्याण करने के

...शेष पृष्ठ 4 पर